

जयन्तीप्रकरणवृत्तिः (फोल्डर नं. ०२५६१)
मूल - श्री मलयप्रभसूरिजी
नवीनसंस्करण सम्पादिका - साध्वी चन्दनबालाश्रीजी
प्रकाशक-श्रुतज्ञान प्रसारक सभा अहमदाबाद
आवृत्ति-१, प्रकाशन वर्ष-२००८, पृष्ठ-४६२

मुख्य टाईटल

जयन्तीप्रकरणवृत्तेर्मूलस्रोत

प्रकाशकीय

प्रथमावृत्तिनी प्रस्तावना

संपादकीय

विषयानुक्रमणिका

मगडालाभिधेयप्रयोजनसम्बन्धादिप्रकाशनम् ॥ -----	४
जयन्तीपरिचय ॥ -----	५
वच्छदेशकोशाम्बीनगरीवर्णनम् ॥ -----	६
शतानीकनृपवर्णनम् ॥ -----	७
मृगावतीमहाराज्ञीस्वरूपम् ॥ -----	८
चित्रकरपुत्रवृत्तान्तकथनम् ॥-----	१९
साकेतपुरे स्थितास्थविराया - पुत्ररक्षणार्थं विलपनम् ॥ -----	१०
चित्रकरपुत्रचित्रितयक्ष - प्रसन्नो वरदापनं च ॥ -----	११
आस्थानस्थितशतानीकनृपवर्णनम् ॥ -----	१२
चित्रसभाचित्रणे चित्रकरपुत्रचित्रितमृगावतीचित्रे नृपस्य जातो रोष ॥ -----	१३-१४
शतानीकेन सण्डासे छिन्ने रुष्टचित्रकरपुत्रेण चण्डप्रधोतस्यालेख मृगावतीचित्रं दर्शितम् ॥ -----	१५
दृष्ट्वां तां चण्डप्रधोतस्य मृगावतीभोगवाञ्छा ॥ -----	१६
चण्डप्रधोतप्रेषितदूतस्य शतानीकेन तिरस्कृत्य निष्काशनं कृतम् ॥ -----	१७
अपशनकनेडपि चतुर्दशराजसहितचण्डप्रधोतस्य युद्धप्रस्थानम् ॥ -----	१८
कौशाम्बीनगर्यामपि जातेऽनिष्टसूचकोत्पादिके भयभ्रान्तशतानिकराजमरणम् ॥ -----	१९
मृगावत्या - संसारासारताचिन्तनम् ॥-----	२०
शीलसत्त्वरक्षार्थं मृगावत्या - सद्भावविचारणा दूतप्रेषणं च ॥ -----	२१
मोहिचण्डप्रधोतेन सज्जीकृतायां कौशाम्ब्यां द्वाराणि पिधाय मृगावत्या दिक्षार्थं भगवद्भागमनस्मरणे कृते प्रभोरागमनम् ॥ -----	२२
देवरचितसमोसरणस्वरूपम् ॥ -----	२३
वन्दनार्थं प्रधोतमृगावत्युदयनादय आगता ॥ -----	२४
संसाराऽसारताविषया वीरप्रभोर्देशना ॥ -----	२५

क्षमादिदशप्रकारमुनिधर्मवर्णनम् ॥ -----	२६
सम्यकत्वादिदेशविरतिधर्मवर्णनम् ॥ -----	२७
तदवसरे भील्लप्रश्नोत्तरे भगवता कथितोऽनङ्गसेनस्य वृत्तान्त ॥ -----	२८-२९
भार्याघातितानङ्गसेनो मृत्वा भवं भ्रान्त्वा कुशस्थले सोमिलविप्रस्य लघुपुत्रीत्वेन जाता ॥ -----	३०
पल्लिपतिसाहसिकस्वसुस्तीव्रकामोदयस्वरूपकथनम् ॥ -----	३१
प्रभुवीरवयसा साहसिकस्य पापपश्चात्ताप ॥ -----	३२
प्रभुकथितपरदारवर्जनस्वरूपं श्रुत्वा केचित सर्वदेशविरतिसम्यकत्व गुणधारिणो जाता ॥ -----	३३
ततो मृगावत्या दीक्षाभिलाष - पूर्णकृतस्तस्या - स्वरूपं च ॥ -----	३४
कौशाम्ब्यां सूर्यचन्द्रावतरणाश्चर्यं मृगावतीसाध्व्या अनुपयोगेन रात्रावुपाश्रयगमनम् ॥ -----	३५
चन्दनबालाशिक्षावचनकथने मृगावत्या - शुद्धात्मविचारसरणि ॥ -----	३६
भावविशुद्धया मृगावत्या - केवलज्ञानप्राप्ति ॥ -----	३७
प्रश्नं कृत्वा जाता केवलज्ञानप्राप्ति, ततश्च चन्दनबालया कृता क्षमापना प्रशंसा च केवलिमृगावत्या ॥ -----	३८
कृतो देवै - केवलिमहिमा ॥ -----	३९
मृगावतीसुतनृपोदयनस्वरूपप्रदर्शनम् ॥ -----	४०
तत्पितु - स्वा जयन्ती जीवादितत्वज्ञात्री प्रथमशय्यातरी धर्ममयमानसा ॥ -----	४१
जयन्त्या आत्मभावनास्वरूपम् ॥ -----	४२
तस्या दीक्षाभिलाषे भगवदागमनं पुनर्जातम् ॥ -----	४३
वर्द्धापितोदयननृपो हृष्टश्च ॥ -----	४४
उदयननृपाज्ञाकृतनगरीशोभावर्णनम् ॥ -----	४५
श्रीवीरवन्दनार्थमुदायननृपस्य समवसरणे गमनम् ॥ -----	४६
दानादिविषया भगवद्देशना ॥ -----	४७
तत्र ज्ञानदानोपरि शिवजक्षस्योदाहरणम् ॥ -----	४८
भिल्लोपरि शिवस्य प्रसन्नतां दृष्ट्वां ब्राह्मणस्य खेद ॥ -----	४९
शिवेन भिल्लस्थसत्त्वगुणदर्शनाय स्वैकाक्षिज्ञातेन बटुक - प्रत्यायित ॥-----	५०
पुलिन्देन शिवाय स्वाक्ष्योरर्पणम् ॥ -----	५१
ज्ञानदानखिन्नतोपरि शकटापितृदृष्टान्तम् ॥ -----	५२
सुस्थिताचार्येण श्रुतदानजनितखेदेन ज्ञानावरणीयकर्म बद्धम् ॥ -----	५३
तत्पुत्री रूपवतीं दृष्ट्वाऽन्याभीरपुत्रैरुन्मार्गे शकटा - खेटिता भग्नाश्च ॥ -----	५४
तददृष्ट्वा जातवैराग्येन गृहीता दीक्षा, उत्तराध्ययनयोगेन न चटति ज्ञानावरणोदयेनाक्षरमेकमपि ॥ -----	५५
धीरेण अज्ञानपरिषह - सोढव्य ॥ -----	५६
गुरुपदर्शिताचाम्लकल्पेन नष्टं ज्ञानावरणीयम् ॥ -----	५७
अभयदाने मेघकुमारकथनाकम् ॥ -----	५८
हस्तिभवे शशकस्य रक्षा कृता ॥-----	५९

राजगृहनगरीवर्णनम् ॥ -----	६०
श्रेणिकनृप - धारिणीराज्ञीस्वरूपम् ॥ -----	६१
स्वप्ने हस्तिस्वरूपं कथनम् ॥ -----	६२
धारिणीदेव्या मेघदोहदस्वरूपम् ॥ -----	६३
दोहदपूरणार्थमभयकुमारस्याष्टमतपस्या तत्पूर्णीकरणं च ॥ -----	६४
मेघकुमारजन्म तदबाह्यादिस्वरूपं च ॥ -----	६५
यौवनेऽष्टकन्यापाणिग्रहणं तत्प्रदत्तसामग्री वर्णनं च ॥ -----	६६-६७
हारार्द्धहारदिस्वरूपव्याख्या ॥-----	६८
भगवदागमने समवसरणे तदगमनं च ॥ -----	६९
भगवद्देशनां श्रुत्वा प्रव्रज्याग्रहणेच्छा ॥ -----	७०
दीक्षाग्रहणार्थं जनकजननीविज्ञापना ॥ -----	७१
दीक्षाकष्टप्रदर्शने मेघकुमारप्रत्युत्तरं श्रुत्वा प्रदत्ताऽनुमति ॥ -----	७२
मेघकुमारस्य राज्याभिषेक ॥ -----	७३
मेघकुमारस्य प्रव्रज्योत्सववर्णनम् ॥ -----	७४
मेघकुमारस्य वृद्धमहिलप्रदत्ता आशिर्वादा ॥ -----	७५
श्रेणिकधारिणीविज्ञस्या जिनेन दीक्षितो मेघकुमार ॥ -----	७६
मेघमुनेर्भगवत्प्रदत्त - शिक्षोपदेश ॥ -----	७७
मेघकुमारस्स स्थविराणां पार्श्वे अभ्यासार्थं गमनम् ॥ -----	७८
द्वारपार्थागतसंस्ताककष्टमनुभूय मेघमुने - परिणामपरिवर्तनम् ॥ -----	७९
पूर्वजन्मकथितहस्तिवृत्तान्तेन भगवता स्थिरीकृतो मुनि ॥ -----	८०
पूर्वभवे स्वाचरितशशकदयां ज्ञात्वा जातो मेघमुनेरपूर्ववीर्योल्लास ॥ -----	८१
गुरुकुलवासे वसतां मुनीनां महालाभा ॥ -----	८२
मन - स्वखलनपापविशुद्धि - कृता मेघमुनिना ॥ -----	८३
मेघमुने - साधुजीवनवर्णनम् ॥ -----	८४
अनशनं कृत्वा मेघमुनेर्देलोकगनम् ॥ -----	८५
सुपात्रदानोपरिश्रेष्ठिवीरभद्रकथानके पञ्जिनीखेडनगरवर्णनम् ॥ -----	८६
श्रीअरनाथजिनेश्वरे समवसृते श्रेष्ठिसागरदत्तस्य पृच्छा ॥ -----	८७
स्वपुत्रीप्रियदर्शनोपरि वीरभद्रस्य ममत्वकथनम् ॥ -----	८८
वीरभद्रोक्त - स्ववृत्तान्त - प्रियदर्शनोपरि स्वरागप्रकटनं च ॥ -----	८९
लग्ने कृते स्वपुरी गमनं, तदगुप्तपरदेशगमने च श्रुते सागरश्रेष्ठिना पृष्ठो भगवान् ॥ -----	९०
तदगुणप्रदर्शनपूर्वकं भगततोक्तं सिंहलद्वीपगमनं तस्य ॥ -----	९१
वीरभद्रस्य सिंहलद्वीपगमनम् ॥ -----	९२
रत्नपुरे वीरभद्रस्यागमनम् ॥ -----	९३
रत्नपुरे शङ्खश्रेष्ठिना वीरभद्रस्य प्रदत्तो मातृपितृसेवाविषयोपदेश ॥ -----	९४
वृद्धशङ्खश्रेष्ठिना पुत्रत्वेन रक्षित - स्वगृहे वीरभद्र ॥ -----	९५

मिलिता स्वभगिनी विनयवती, तया कथितं राजपुत्र्यनङ्गसुन्दरीस्वरूपम् ॥ -----	९६
तया सह स्त्रीवेषं कृत्वा गतेन वीरभद्रेण कलारज्जितया राजकुमार्या नित्यमागनमे दत्तमामन्त्रणं तस्य । -----	९७
अनेककलारज्जितऽनङ्गसुन्दर्या - कुमारीत्वविषया पृच्छा कृता वीरभद्रेण ॥ -----	९८
अनुरूपवराभावकथने वीरभद्रेण प्रकटिते स्वस्वरूपे कुमार्या मनप्रसन्नता, जातं लग्नं तेन सह ॥ ----	९९
अन्योऽन्यं गाढप्रीत्यां वीरभद्रेण दर्शितो जैनधर्म, स्वीकृतोऽनङ्गसुन्दर्या च ॥ -----	१००
द्वयोरन्योन्यं सधर्मचरितानां स्नेहभृतां जिनेन्द्रधर्मोद्धम जात ॥ -----	१०१
मातृपितृस्मरणेन पोतेन तामलिसिपुरीगमने वीरभद्रस्यानिर्विधनप्राप्तिमनोरथ ॥ -----	१०२
समुद्रोत्पातेन भग्ने पोतेनऽङ्गसुन्दर्या तीरदेशप्राप्ति ॥ -----	१०३
आश्रमे तापसेन कुलपतिसमीपे नीताऽनङ्गसुन्दरी ॥ -----	१०४
कुलपत्युपदेशेन शान्ता प्राणवृत्तिं कारिता वीरभद्रश्च विधाधरेण गगनवल्लभे पुरे नीत । -----	१०५
अस्थिरचितवीरभद्रस्य कथितो लीलारतिना पञ्चखेटप्राप्तानङ्गसुन्दर्या वृत्तान्त ॥ -----	१०६
तापसश्रमण्या अनङ्गसुन्दरी प्रति संसारस्वरूपस्य कथनम् ॥ -----	१०७
प्रसन्नो वीरभद्रो रत्नवती विधाधरी परिणायित ॥ -----	१०८
लोकप्रीति सम्पादिता वीरभद्रेण, आकाशगामिन्या पञ्चखेटनगरं प्राप्तं च ॥ -----	१०९
रत्नवती श्रण्युपाश्रयपार्श्वे मुक्त्वा गुप्तवामनरूपो जात ॥ -----	११०
जिनेन कथित श्रेष्ठी, स एव वीरभद्र, सुपात्रदानं दत्त्वा प्राप्त एतादृशीमृद्धिम ॥ -----	१११
पूर्वभवे कृतेन सुपात्रदानेन अर्जितं पुण्यम् ॥ -----	११२
उचितादिदानस्वरूपकथनम् ॥ -----	११३
सोमदेवब्राह्मणदृष्टान्त ॥-----	११४
करुणादानदातृब्रह्मचन्द्रस्वरूपम् ॥ -----	११५
अपगतिगतसोमचन्द्रकिल्बिषदेवसमागम ॥ -----	११६
तस्योपरि पुत्रस्य करुणा भावना ॥ -----	११७
आर्यसुहृस्तिना द्रमकस्य दयादानम् ॥ -----	११८
मुनीन दृष्ट्वा प्रशंसापूर्वकमन्नयाचना रोरस्य ॥ -----	११९
सूरिणा प्रदत्तदीक्षो द्रमक, कृतसरसाहारभोजनोऽजीर्णेन मृत्वा कृणालपुत्रो जात ॥ -----	१२०
पाटलीपुत्रं गत्वा गीतरज्जितनृपपार्श्वे कुणालेन याचिते राज्ये नृपस्य स्वपुत्रस्मरणं जातम् ॥-----	१२२
पुत्रजन्म श्रुत्वाऽशोकनृपेण तत्पुत्रसम्पत्तेर्दत्ते राज्ये कृतं श्रावकगणेन रथयात्रामहोत्सव ॥ -----	१२३
रथयात्रागतसुहृस्तिगुरं दृष्ट्वा प्राप्तजातिस्मरणसम्प्रतिनृपेण शासनप्रभावना कार्यं कृतम् ॥ -----	१२४
जिनधर्मप्रशंसया सम्प्रतिनृपस्य बोधिफलं प्राप्तम् ॥ -----	१२५
शीलद्वारे सुदर्शनश्रेष्ठिदृष्टान्त ॥ -----	१२६
चम्पानगर्या ऋषभदासश्रेष्ठिकर्मकरसुभगेन नमस्कारमन्त्रो गृहीतो गगनविधेति ॥ -----	१२७
सो नमस्कारमन्त्रपरायणो मृत्वा श्रेष्ठिपुत्र सुदर्शनो जात ॥ -----	१२८
सुदर्शनजन्ममहोत्सवादिनिरूपणम् ॥ -----	१२९
श्रेष्ठिना पुत्रस्य गुणसमृद्धो सुदर्शननामा प्रसिद्धिम् ॥ -----	१३०

तं दृष्ट्वा वृद्धतरुणीरमणीनामाशिर्वादा ॥ -----	१३१
यौवनस्थिते सुदर्शने श्रेष्ठिपदं दत्त्वा ऋषभदासेन गृहीता दीक्षा ॥ -----	१३२
तत्र पुरोहितस्त्रीकपिलाया कामविकारप्रदर्शनम् ॥ -----	१३३
सुदर्शनपार्श्वं याचिता क्षमापना कपिलया ॥ -----	१३४
कपिलाकथितं वृत्तान्तं श्रुत्वाऽभयया प्रतिज्ञा कृता ॥ -----	१३५
अभयाऽऽदिष्टपण्डितया प्रपञ्चेनानीत सुदर्शन ॥ -----	१३६
अभययोपसर्गितेऽपि सुदर्शने तन्मनोरथो निष्फलो जात ॥ -----	१३७
अभयया कामविकारप्रदर्शनम् ॥ -----	१३८
तया कलङ्के दत्ते मौनिसुदर्शनस्य राज्ञा शूल्योरोपणशिक्षाकृता ॥ -----	१३९
नगरलोकस्य हाहाकार ॥ -----	१४०
कायोत्सर्गे स्थिता तत्पत्नी मनोरमासती ॥ -----	१४१
व्यसनजलधौ पतितस्य सुदर्शनस्य विचारणा ॥ -----	१४२
निष्फले वधप्रयासे राज्ञा सत्कारपूर्वकं स्वप्रासादे नयनम् ॥ -----	१४३
गृहीतायां दीक्षायामुपसर्गे धीरत्वम् ॥ -----	१४४
सुदर्शनमुनिवरस्य केवलज्ञानप्राप्ति, देवै केवलज्ञानमहोत्सवं कृतम् ॥ -----	१४५
देवै सुदर्शनकेवलिनं सदभूतगुणस्तवनम्, सुदर्शनकेवलिनो धर्मदेशना ॥ -----	१४६
सुदर्शनकेवलिनो धर्मदेशना ॥ -----	१४७
केवलिः सुदर्शनस्य मोक्षगमनम् ॥ -----	१४८
तपोधर्मस्वरूपम् ॥ -----	१४९
सरलतायां फल्लिहमल्लदृष्टान्ते सोपारकनगरेशसिंहरथराजवर्णनम् ॥ -----	१५०
अट्टणमल्लस्य पुन, तारुण्यप्रात्यर्थ रसायणप्रयोग ॥ -----	१५१
उज्जेणीनगर्या अट्टणेण लब्धार्थ ॥ -----	१५२
फल्लिहमल्लमच्छियमल्लयुद्धं सोपारके नगरे ॥ -----	१५३
फल्लिहमल्लजये महार्थदानम् ॥ -----	१५४
विनये कुलपुत्रदृष्टान्त ॥ -----	१५५
मातृपितृविनयादिप्रवृत्तकुलपुत्रकस्य विनयविषया विचारणा ॥ -----	१५६
विनयेन प्रसन्नीकृता ग्रामपतिसामन्तमण्डलेश्वरा कुलपुत्रेण ॥ -----	१५७
कुलपुत्रेण सामन्तस्य सविशेषं विनयं कृतम् ॥ -----	१५८
कुलपुत्रेण मण्डलपते सविशेषं विनयं कृतम् ॥ -----	१५९
राजाधिराजश्रेणिकमहाराजसेवा स्वीकृता कुलपुत्रेण ॥ -----	१६०
समवसृते वीरे कुलपुत्रकस्य देवाधिदेवज्ञानस्य प्राप्ति ॥-----	१६१
भगवता कृता वैराग्यवाहिनी देशना ॥ -----	१६२
श्रुत्वा देशनां कुलपुत्रकेण गृहीता दीक्षा विनयेन मोक्षप्राप्तिश्च ॥ -----	१६३
कायोत्सर्गतपसि चन्द्रावतंसकनूपोदाहरणम् ॥ -----	१६४
वैराग्ययुक्तभावनया सामायिकस्वीकारस्तस्य ॥ -----	१६५

दीपके दासीकृततैलप्रक्षेपेऽपि नृपस्य वर्द्धमानभावना ॥	१६६
नृपस्य धर्मध्यानविचारणा ॥	१६७
क्षामणापूर्वकं प्रभाते स्वर्लोकगमनम् ॥	१६८
भावनाधर्मोपरि भरतनृपोदाहरणम् ॥	१६९
वज्रसेनतीर्थकरदेशना ॥	१७०
वज्रसेनतीर्थकरदेशनया वज्रनाभचक्रिणो वैराग्यं जातम् ॥	१७१
वज्रनाभबाहुसुबाहुपीठमहापीठदीक्षा ॥	१७२
वज्रनाभेन वैयावृत्यविषया बाहुसुबाहुमुनिवराणां कृता प्रशंसा ॥	१७३
वज्रनाभबाहुसुबाहुपीठमहापीठानां सर्वार्थसिद्धिगमनम् ॥	१७४
मरुदेवाकथितचतुर्दशस्वप्ने नाभिकुलकरस्य फलकथनम् ॥	१७५
प्रथमजिनस्य जन्ममहोत्सव ॥	१७६
ऋषभदेवस्य पुत्रपरिवार ॥	१७७
शिल्पादि दर्शयित्वा भगवता गृहीता दीक्षा, प्राप्ते केवलज्ञाने च समवसरणम् ॥	१७८
बाहुबलेदीक्षा ॥	१७९
भरतचक्रिसम्पदावर्णनम् ॥	१८०
शरीरानित्यभावनाभावित्वं भरतचक्रिण ॥	१८१
भरतचक्रिण शरीरस्य दुग्ज्छाभावनम् ॥	१८२
आदर्शभवने प्राप्ते केवले वेषं गृहीत्वा लक्षपूर्वं भरतकेवलिनो विचरणम् ॥	१८३
दान- शील - तप भावस्वरूपया चतुर्विधकथया जीवानां सम्यक्त्व - सर्वविरत्यादिप्राप्ति ॥	१८४
जयन्त्या प्रश्नेऽष्टादशपापस्थानकवर्णनम् ॥	१८५
प्राणिवधविरतौ बन्धुमतीदृष्टान्त ॥	१८६
मदनासक्ताया सम्पदाया पुत्रमारणेच्छा ॥	१८७
मुनिचन्द्रेण स्थावरो हत ॥	१८८
मात्रा पुत्रो मारित पुत्रवधूना श्वस्रा मारिता ॥	१८९
सत्यस्य व्याख्या असत्ये वसुनृपोदाहरणम् ॥	१९०
पर्वत - नारदयोर्गोष्ठि ॥	१९१
नारद - पर्वतयोर्वेदपदे विवादो जात ॥	१९२
असत्येन वसुनृपो नरकं गत ॥	१९३
अदत्तादानोपरि दुर्ललितगोष्ठिदृष्टान्त ॥	१९४-१९५
मैथुनपापस्थानके विपाकविवरणम् ॥	१९६
तदुपरि वणिकसुतोदाहरणम् ॥	१९७
जिनदत्तसुत तारुण्ये विषयेषु पराडमुख ॥	१९८
स्वदारसन्तोषी जिनदत्तपुत्र ईतरयोर्जातं मातृगमनमहत्पापम् ॥	१९९
मोचापिता ता पुत्रैर्धनदानेन तथाऽपि द्वयो पश्चात्तापेन समुद्रे पात ॥	२००
जननीसहितो जिनदत्तपुत्रो गिरिनगरं सुखेन प्राप्त ॥	२००

परिग्रहे लोभनन्दिदृष्टान्त ॥ -----	२०१
भण्डारीकृतो जिनदत्तो राज्ञा विनाशितो च लोभनन्दी ॥ -----	२०२-२०३
क्रोधविषये प्रसन्नचन्द्रमुनिदृष्टान्त ॥ -----	२०४
समवसृतभगवत पार्श्वे प्रसन्नचन्द्रराज्ञो दीक्षा ॥ -----	२०५
राजगृहे वीरजिनेन्द्र समवसृत,श्रेणिकनृपेण पटहपूर्वकघोषणं कारित ॥ -----	२०६
सुमुखदूतेन तस्य व्रतस्वीकारप्रशंसा कृता ॥ -----	२०७
दुर्मुखेन तस्य निन्दा कृता तत क्रोधप्रादुर्भाव ॥ -----	२०८
श्रीप्रसन्नचन्द्रमुनिविषयकप्रश्नोत्तरं भगवत ॥ -----	२०९
मनसा युद्धं प्रसन्नचन्द्रमुने ॥ -----	२१०
प्रसन्नचन्द्रेण मनसा युद्धं कृतं तस्य वर्णनम् ॥ -----	२१०-२११
प्रसन्नचन्द्रमुनिवरस्य केवलज्ञानप्राप्ति ॥-----	२१२
मानविषये बाहुबलिदृष्टान्त ॥ -----	२१३
भरतप्रेषितदूतकथनम् ॥ -----	२१४
बाहुबलेरुत्तरम् ॥ -----	२१५
युद्धप्रस्थितभरतसेनावर्णनम् ॥ -----	२१६
बाहुबले सेनावर्णनं भयङ्करयुद्धविचारणा च ॥ -----	२१७
भरतबाहुबल्योरुत्तमयुद्धेन बलाबलनिर्णय ॥ -----	२१८
दृष्टियुद्धे बाहुबलेर्जय ॥ -----	२१९
वागयुद्धेऽपि भरतस्य पराजय ॥ -----	२२०
बाहुदण्डमुष्टियुद्धेष्वपि पराजयो भरतस्य ॥ -----	२२१
भरतेन चक्रे प्रक्षिप्ते बाहुबलेरात्मधर्मविचारणा ॥ -----	२२२
बाहुबलेश्चरित्रग्रहणम् ॥ -----	२२३
कायोत्सर्गस्थितबाहुबलीपार्श्वे भगवता ब्राह्मीसुन्दर्यो प्रेषिते, हस्तिगतानां तपस्विनां केवलज्ञानं न भवति ईति भगिनिवचनश्रवणेन बाहुबलेर्विचारणा ॥ -----	२२४
बाहुबले केवलज्ञानप्राप्तौ समवसरणे गमनं मोक्षप्राप्तिश्च ॥ -----	२२५
मायायां पण्डुरार्याया दृष्टान्त ॥ -----	२२६
दीक्षास्वीकारे शिथिला आचारेस अन्ते चालोच्य स्वीकृतोत्तमार्थकल्पे प्राप्ता प्रशंसा ॥ -----	२२७
अनशने स्वपूजावाञ्छायां गुरुनिषिद्धाऽपि माया न त्यक्ता तेन कुदेवत्वं प्राप्ता ॥ -----	२२८
मायायां वणिकपुत्रोदाहरणम् ॥ -----	२२९
मायायां धनश्रीकथानकम् ॥ -----	२३०
परिणयानन्तरं विधवा जाता, तत्पित्रा स्वगृहे दानादिकधर्मं नियोजिता ॥ -----	२३१
साध्वीसङ्गेन धर्मं दृढता जाता ॥ -----	२३२
भ्रातृपत्नीकृतेर्षायां तया भ्रातृचित्तविलोकने मायावचनप्रयोग कृत ॥ -----	२३३
भ्रातृपत्नीकृतेर्षायां तया भ्रातृचित्तविलोकने मायावचनप्रयोग कृत ॥ -----	२३४
तेन भ्रातृचित्तरागो निश्चित ॥ -----	२३५

अन्ते सर्वेषामपि दीक्षाप्राप्ते स्वर्लोकगमनम् ॥ -----	२३६
धनश्रीजीवो देवलोकात् च्युत्वा गजपुरनगरे शङ्खश्रेष्ठिपुत्री जाता ॥ -----	२३७
सर्वाङ्गसुन्दर्या पूर्वकृतकर्मोदयात् पतिना त्यक्ता ॥ -----	२३८
तन्मात्राऽऽश्वासिता सती स्वव्रतेच्छां प्रदर्शितवती ॥ -----	२३९
कियत्कालं व्यतिक्रम्य दीक्षा गृहीता सर्वाङ्गसुन्दर्या ॥ -----	२४०
साकेतपुरे विचरणं, तत्र पूर्वभवे भ्रातृजाययोर्धर्मप्राप्तेर्निबिडा प्रीति पूर्वभवियकर्मोदयादाश्चर्यं दृष्टं च तया ॥ -----	२४१
चित्रितमयूरेणोतीर्थं हारो गिलितस्ततश्चोर्यकलङ्कमापतितम् ॥ -----	२४२
प्रवर्तिनीवचसा तया समतया कलङ्कं सोढम् ॥ -----	२४३
सर्वाङ्गसुन्दरीरार्यया धर्मध्यानचिन्तनं कृतम् ॥ -----	२४४
शुद्धभावनया केवलज्ञानप्राप्तौ देवकृता स्तुतिर्धर्मदेशना च कृता ॥ -----	२४५
देशनायां चतुर्गतिदुःखप्रदर्शनम् ॥ -----	२४६
समुद्रदत्तेन चित्रमयूरागिलितहारविषयक प्रश्न कृत केवलिना सर्वपूर्वभवियवृत्तान्तो ज्ञापितश्च ॥ -----	२४७
सर्वाङ्गसुन्दरार्यया सिद्धिगमनम् ॥ -----	२४८
लोभपापस्थानकस्वरूपम् ॥ -----	२४९
लोभपापस्थानके कपिलोदाहरणम् ॥ -----	२४९-२५०
कोसम्बीपुर्या कपिलस्य वेदाभ्यास, तत्र श्रेष्ठिगृहे दास्या सह स्नेहो जात ॥ -----	२५०
सुवर्णविषयकविचारणा कपिलस्य ॥ -----	२५१-२५२
कपिलस्य जातिस्मरणज्ञानं राज्ञो दुरन्तर्थाविषयोपदेशश्च ॥ -----	२५३
कपिलमुने केवलज्ञानं केवलज्ञानेन पूर्वभवाभ्यस्तचरणानां पञ्चशतचौरा अरण्ये पश्यन्ति ॥ --	२५४-२५५
रागपापस्थास्वरूपे श्रीकान्तोदाहरणम् ॥ -----	२५५
अर्हमित्रपार्श्वे श्रीकान्तया कामभोगयाचना ॥ -----	२५६-२५७
तिरस्कृतामर्हमित्रेण पतिमारिका श्रीकान्ता ॥ -----	२५८
स्वशीलरक्षणार्थमर्हमित्रेण विचारणा कृता ॥ -----	२५८-२५९
अर्हमित्रेण श्रीधर्मघोषसूरिपार्श्वे गृहीता दीक्षा ॥ -----	२५९
आर्तध्यानेन मृता श्रीकान्ता कुक्कुरी जाता, तत्पश्चात् वनमर्कटी, तत्पश्चात् व्यन्तरी जाता ॥ ----	२६०
व्यन्तरीभवे कृत्योपसर्गं गुरुदेशनया प्रतिबुद्धा ॥ -----	२६१
द्वेषपापस्थानकस्य स्वरूपम् ॥ -----	२६२
द्वेषे नन्दानाविकोदाहरणम् ॥-----	२६३
तेजोलेश्या दग्धो नन्दजीवो गृहकोकिलो जात ॥ -----	२६४
द्वेषधारकगृहकोकिलो तेजोलेश्यया मृत्वा हंसो जात, तत् पश्चात् सीहो जात ॥ -----	२६५
ततश्च बटुकभवेऽपि द्वेषं वहन मृत्वा वाणारसीनृपो जातो मुनिवरं दृष्ट्वां जातिस्मरणम् ॥ -----	२६६
पुरीनगर्या भूतपूर्वनन्दजीवराज्ञा क्षामितो धर्मरुचिमुनिवर ॥ -----	२६८
नन्दजीवराज्ञा मुनिक्षणार्थं मुनिसमीपे गमनम् ॥ -----	२६९
राज्ञा मुनिवरस्य स्तुति, मुनिना धर्मोपदेशं दत्तम् ॥ -----	२६९-२७०

मुन्युपदेशेन राज्ञ सम्यकत्वप्राप्ति, अन्ये जीवा मुनिवरोपदेशेन सर्वविरत्यादिधर्म प्राप्ता ॥ -----	२७१
कलहपापस्थानस्वरूपम् ॥ -----	२७२
हरिकेशिमुनिवरदृष्टान्ते पुरोहितसोमस्य स्वकृतदोषश्चात्ताप ॥-----	२७३
गृहीतदीक्ष पुरोहितो जातिमदेन नीचगोत्रं बदध्वा चाण्डालकुले बलो जात क्लेशप्रियश्च ॥ -----	२७४
सविषसर्पकदर्थनां दृष्टवां क्लेशप्रियतात्यागे सम्यग्विचारणा ॥ -----	२७५
बालो मुनिवरो जात सातिशयगुणाद यक्ष सेवाकारीभूत ॥ -----	२७६
परिणयनार्थमागता राजकन्या मुनिवरेण निषिद्धा ॥-----	२७७
मासखमणपारणे यज्ञे भिक्षार्थमागते मुनिवरे प्रतिलाभिते जातानि दिव्यानि ॥ -----	२७८-२७९
अभ्याख्यानपापस्थानकस्वरूपम् ॥ -----	२७९
अभ्याख्यानपापस्थानत्यागेऽङ्गर्षिछात्रदृष्टान्त ॥ -----	२८०
रुद्रछात्रदत्तकलङ्केन गुरुतिरस्कारे सति गृहीताऽङ्घ्रिणा दीक्षा ॥ -----	२८१
विशुद्धहृदयाऽङ्गर्षे केवलज्ञानप्राप्ति ॥ -----	२८२
अरतिपापस्थाने क्षुल्लकोदाहरणे पुण्डरिकनृपस्य यशोभद्रोपरि कामार्ता दृष्टि ॥ -----	२८३
यशोभद्रया गृहीता दीक्षा, तत्पुत्रक्षुल्लकगृहीतदीक्षस्य च चारित्रेऽरतिर्जाता ॥ -----	२८४
प्रेक्षणे नर्तकीगीतिश्रवणात् स्वस्थो जात चारित्रे ॥ -----	२८५
रतिपापस्थानकस्वरूपम् ॥ -----	२८६
रतिपापस्थाने ब्रह्मदत्तचक्रिवृत्तान्त ॥ -----	२८६
जातिस्मरणेन चक्रिणा श्लोकार्द्धे रचिते तत्पूर्तीकृता मुनिवरेण ॥ -----	२८७-२८८
चक्रिणा स्वपूर्वभवा दर्शिता प्रधानलोकानाम ॥ -----	२८९
चित्र - सम्भृत्यो मातङ्गभवे नमुचिकृतोपद्रवे नगरान्निष्कानम् ॥ -----	२९०
चित्र - सम्भृतिभ्यां गजपुरनगरे गीतकलाभि नगरलोको एकाकारीकृत ॥ -----	२९१
मुनिवरसमागमाच्चित्र - संभृतिभ्यां गृहीतां दीक्षा ॥ -----	२९२
उपद्रवे सम्भृतिमुनि चित्रमुनिकृतोपदेशात् शान्तीभूत ॥ -----	२९३
समत्कुमारचक्रिणा नमुचिप्रधानो निष्काशित ॥ -----	२९४
सनत्कुमारेण वन्दितो मुनिवर ॥ -----	२९५
मुनिदर्शने श्रीब्रह्मदत्तचक्रवर्तस्संतुष्टि ॥ -----	२९६
भोगत्यागे ब्रह्मदत्तस्य मुनिवरेणोपदेशो दत्त ॥ -----	२९७
मुनिपतिना पूर्वभववृत्तान्त कथित ॥-----	२९८
भोगलोलुपतयाऽन्ते नरकगतिप्राप्ति ॥ -----	२९९
पैशुन्ये सुबन्धुमन्त्रिदृष्टान्त ॥ -----	३००
बिन्दुसारनृपस्य मिथ्याकोपे चाणक्यस्याऽनशनस्वीकार ॥ -----	३०१
सत्ये ज्ञाते नृपस्य पश्चात्ताप पुन पुनर्विज्ञप्तिश्च ॥ -----	३०२
अनशनस्थाने सुबन्धुना प्रज्वालित कारिषाऽग्नि तेन चाणक्यदेहे दाह ॥ -----	३०३
चाणक्यस्य शुद्धलेश्याचतुशरणकरणं च ॥ -----	३०४
विसुद्धभावो चामक्यो श्रावक देवलोके सुरवरो जात ॥ -----	३०५

पैशुन्यकारिसुबन्धोर्दु खिजीवनं च ॥ -----	३०६
परपरिवादस्य स्वरूपं, परपरिवादे सुभद्राश्वश्रुतान्त ॥ -----	३०७
बुद्धदासेन श्रावकीभूय परिणीता सुभद्रासती ॥ -----	३०८
मुनिनेत्रपतिततृणापनयनेन श्वश्रूपरिवारेण सुभद्रोपरि दत्त कलङ्क ॥ -----	३०९-३१०
श्वश्रूप्रमुखाभि दुष्टरमणीभि बुद्धदासस्य प्रकाशित ॥ -----	३१०
तज्ज्ञात्वा सुभद्रासत्या सम्यग्विचारणा ॥ -----	३११
कायोत्सर्गस्था सुभद्रोपरि तुष्टया शासनदेव्या शासनप्रभावनोपाय सूचित ॥ -----	३१२
नगरीद्वारोदघाटनाय सुभद्राकरस्थचालन्यां जलं स्थितम् ॥ -----	३१३
तेन जलेनोदघटितानि द्वाराणि महती च शासनप्रभावना जाता ॥ -----	३१४-३१५
मायामृषावादपापस्थानकस्वरूपम् ॥ -----	३१६
मायामृषावादपापस्थानके कूटक्षपकोदाहरणम् ॥ -----	३१६
धूर्ततपस्विन मायामृषावादे प्रकटिते ताडनतर्जनादिदुःखप्राप्ति ॥ -----	३१७
मिथ्यात्वशल्यपापस्थाने कण्डरीकोदाहरणम् ॥ -----	३१८
स्थविरगुरुणां देशनाश्रवणे पुण्डरीकनृपस्य दीक्षाऽभिलाष ॥ -----	३१९
पुण्डरीकनृपाजामस्वीकृत्य कण्डरीकेन गृहीता दीक्षा ॥ -----	३१९
पुनरागते गरुणा सह कण्डरीके नृपेण कृतो महामहोत्सव कण्डरीकदेहचिकित्सा च कारिता ॥ -	३२०-३२१
पुण्डरीकनृपवचनाद गरुणा सह कण्डरीकस्य विहार ॥ -----	३२३
कण्डरीकमुनेश्चित्तचञ्चलता जाता ॥ -----	३२३-३२४
भग्नपरिणाम कण्डरीक उधान समागत परीक्षित पुण्डरीकेन ॥ -----	३२४-३२५
पुण्डरीकनृपेण तद्वेषं गृहीता स्वीकृता दीक्षा कण्डरीकश्च क्रूरपरिणामेन सप्तमीं नरकं गत ॥ -----	३२६
अष्टादशपापस्थानकफलनिरूपणम् ॥ -----	३२७
भव्याभव्यविषयजयन्तीकृतप्रश्नोत्तरम् ॥ -----	३२७
अभव्यत्वे रुद्रदेवाचार्यदृष्टान्तकथा ॥ -----	३२८-३२९
जितशत्रुनृपस्य प्रव्रज्याग्रहणं केवलज्ञानप्राप्तिश्च ॥ -----	३३०
भव्यरहितलोक ईति प्रश्ने भगवतोक्तं समाधानम् ॥ -----	३३१
मोक्षगमने भव्यजीवव्याप्ति प्रदर्शिता ॥ -----	३३२
तद्विषयकविचारान्तरं प्रकटितम् ॥ -----	३३२
तदुपरिवाक्पतिराजदत्तप्रश्नोत्तरे बप्पभट्टसूरीणां हर्ष ॥ -----	३३२-३३३
बप्पभट्टसूरिणा बप्पईनृपस्य जिनधर्मकथनम् ॥ -----	३३४-३३५
बप्पभट्टसूरिणा प्रतिबोधितो बप्पईराजा ॥ -----	३३५
जैनदीक्षास्वीकारेण तस्य वैमानिकदेवत्वप्राप्ति, जागरिकासुप्तविषयकप्रश्नोत्तर ॥ -----	३३६-३३७
जागरिकसुप्तविषयकप्रश्नोत्तरे कालसौकरिकोदाहरणम् ॥ -----	३३७
सेडुकद्विजवृत्तान्त ॥ -----	३३८
दर्दुरदेवेन कृता परीक्षा श्रेणिकभूपते ॥ -----	३३९
श्रेणिकनृपो पृच्छति, भगवन कारुण्यपूर्णभक्त्यात्वय्याराधिते नरके पतनं मम कथम् ॥ -----	३४१

श्रेणिकनखरेणोक्त कालो जीवधवर्जनार्थम ॥ -----	३४२
श्रेणिककृते प्रतिबोधोपायेऽपि कालो न प्रतिबुद्ध ॥ -----	३४३
मृत्वा नरकं गतो काल ॥ -----	३४४
जागृता धर्मिजना श्रेष्ठा ईत्यर्थ श्रीआर्यरक्षितोदाहरणम ॥ -----	३४५
मात्रादेशेन दृष्टिवादपठनार्थ आर्यरक्षितेन गमनम ॥ -----	३४६
मातृप्रसादनाय दृष्टिवादपठनार्थ गृहीतां दीक्षा आर्यरक्षितेन ॥ -----	३४७
दृष्टिवादपठनार्थ गमनेऽन्तराले निर्यापिता भद्राचार्या गुरुव आर्यरक्षितेन ॥ -----	३४८
श्रीवज्रस्वामिपार्श्वेदृष्टिवादं पठताऽऽर्यरक्षितेन स्वभ्राता दीक्षित ॥ -----	३४९
श्रीतोसलिपुत्रगरुणा स्वपदे स्थापित, स्वजना दीक्षिता निगोदविचार शक्रस्य कथितस्तेन ॥ --	३४९-३५०
दुर्बलकपुष्यमित्रस्य स्वजना प्रतिबोधिता ॥ -----	३५१
जैनध्यानस्वरूपप्रकटनम ॥ -----	३५२
दुर्बलिकत्वबलित्वविषयकप्रश्नोत्तर ॥ -----	३५३
दुर्बलिकत्व - बलित्वविषयकप्रश्नोत्तरे द्रमकद्वष्टान्त ॥ -----	३५३-३५४
बलिकत्वे द्रढप्रहारिद्वष्टान्त ॥-----	३५५
गर्भवतीब्राह्मणी हत्वा द्रढप्रहारिणो जात पश्चात्ताप ॥ -----	३५६
उधानमध्ये द्रढप्रहारिणा गुरुर्दष्टे ॥ -----	३५७
अतिशयज्ञानिमुनिवरसंयोगे धर्मोपदेश द्रढप्रहारिणा चारित्रं गृहीतम ॥ -----	३५८
चारित्रं गृहीत्वा शान्तभावेन परीषहा सोढा, केवलज्ञानं प्राप्य सिद्ध द्रढप्रहारी ॥ -----	३५९
दक्षत्वालसिकत्वविषयकप्रश्नोत्तरे नन्दिषेणमुनिवरोदाहरणम ॥ -----	३५९-३६०
मुनिवरं प्राप्य गृहीता दीक्षा गीतार्थीभूय वैयावृत्यतत्परो जात ॥ -----	३६१
वैयावृत्यविषयां शक्रकृता प्रशंसा श्रुत्वा नन्दिषेणो देवेनैकेन परीक्षित ॥ -----	३६२
प्रकटितनिजरूपो देवो नन्दिषेणस्य चरणकमलं वन्दते ॥ -----	३६३
देवेन क्षामितो मुनिवर, वैयावृत्यविधाने एतादृशि दक्षत्वं श्रेष्ठम ॥ -----	३६४
श्रोत्रेन्द्रियवशग प्राणी कीदृश कर्मबन्ध करोतीति प्रश्नोत्तरम ॥ -----	३६५
श्रोत्रेन्द्रियविषयासक्ता भद्रासार्थवाहीद्वष्टान्ता ॥ -----	३६५
दास्युक्तपुष्पसालगीतश्रवणाभिलाषो भद्राया ॥ -----	३६६-३६७
भद्राया अकालमरणे कुगति संसारपरिभ्रमणं च ॥ -----	३६८-३६९
लोचनेन्द्रियविषयासक्तौ वणिकपुत्रोदाहरणम ॥ -----	३६९
चक्षुर्लोलुपतायां महेश्वरद्वष्टान्त ॥ -----	३७०
महेश्वरेण राज्युपरि लेखो लिखित ॥ -----	३७१
राज्ञीलेखाद भगनहृदयो भूत्वा देशान्तरो गतो महेश्वर ॥ -----	३७२
हारप्रभा प्राप्तिविषया जिनदत्तकथा श्रुता तेन ॥ -----	३७३
जिनदत्तेन विधार्थीभूय हारप्रभाऽऽवर्जिता ॥ -----	३७४
हारप्रभा ग्रहिलीभूता ॥ -----	३७५
कपटोपायेन चट्टेन स्वस्थीकृता श्रेष्ठिना च तेन सह परिणायिता ॥ -----	३७६-३७७

एवं मथुरावणिकेन कपटाद धारिणीदेवी प्राप्ता ॥ -----	३७८
कपटं ज्ञात्वा दीक्षां लात्वा च स्वर्लोकं गता धारिणी ॥ -----	३७९
धाणेन्द्रियलोलुपतया प्राणिनो दुखिनो भवन्ति ॥ -----	३८०
धाणेन्द्रियलोलुपे गन्धप्रियकुमाराद्दृष्टान्त ॥ -----	३८०-३८१
रसनेन्द्रियलम्पटताया स्वरूपम ॥ -----	३८२
रसन्द्रिय लोलुपे सोदासनृपद्दृष्टान्त ॥ -----	३८२
मनुष्यमांसभक्षको जातो सोदासनृप ॥ -----	३८३
राज्यभ्रष्टोऽरण्ये वासुदेवेन मारित सोदासनृपो नरकं गत ॥ -----	३८४-३८५
स्पर्शेन्द्रियलोलुपतायामवन्तिनाथोदाहरणम ॥ -----	३८५
स्वपुत्रादिभिररण्ये त्यक्तो दुःखभागी जात ॥ -----	३८६-३८७
रथचक्रान्मृतोऽवन्तीनाथ ॥ -----	३८८
बन्धुमतिरपि तेन सह सती जाता ॥ -----	३८९
नरसुन्दरराजा वैराग्येन अनशनं कृतम ॥ -----	३९०
जयन्त्या गृहीता दीक्षा भगवत्पार्श्वे ॥ -----	३९०
तपविषयकदेवानन्दा दृष्टान्ता ॥ -----	३९१-३९२
जयन्ती चारित्रं प्रपाल्य मुक्तिं गता ॥ -----	३९३
ग्रन्थकारस्य वंशपरम्परा ॥ -----	३९४
मानतुङ्ग - मलयप्रभसूरिवर्णनम ॥ -----	३९५
एतत्पुस्तकलिखापयित्रीनाऋश्राविकावंशपरम्परा ॥ -----	३९७
जिनमते रूक्या नाऋश्राविकया एतत्पुस्तकलिखापितम ॥ -----	३९८
पर्यन्ताशिर्वादप्रकटनम ॥ -----	३९८
ग्रन्थकारस्य प्रशस्ति -----	३९४-३९६
ग्रन्थलिखापितकारस्य प्रशस्ति -----	३९७-३९९
परिशिष्टम - मूलगाथानामकाराधनुक्रमणिका -----	४०१-४०२
परिशिष्टम - उद्धरण - तात्त्विकपधानाज्याकाराधनुक्रमणिका-----	४०३-४०८
परिशिष्टम - विशेषनाम्नामकाराधनुक्रमणिका-----	४०९-४१७
परिशिष्टम - कथानामकाराधनुक्रमणिका -----	४१८-४१९
परिशिष्टम - देशना - धर्मकथा - भावनादिविषयानां सङ्ग्रह -----	४२०-४२२
परिशिष्टम - ग्रन्थकारस्य प्रशस्तीनामकाराधनुक्रमणिका -----	४२३
परिशिष्टम - ग्रन्थलिखापयित्रीया प्रशस्तीनामकाराधनुक्रमणिका -----	४२४